eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 12, December 2025

समकालीन हिंदी कविता में देश बदलने की एक पहल

डॉ0 अजय कुमार[1]
[1]एसोसिएट प्रोफुसर–हिंदी, महामाया राजकीय महाविद्यालय कौशाम्बी (उ0प्र0)

Received: 26 Dec 2025 Accepted & Reviewed: 28 Dec 2025, Published: 31 December 2025

Abstract

"कविता नहीं बदलती देश को
पर कविता बदल देती है सोच को,
और सोच ही तो देश को बदलती है।"

समकालीन हिंदी कविता भारतीय समाज, राजनीति, संस्कृति और मानवीय सरोकारों का दर्पण है। आज की कविता केवल सौंदर्य या भावनात्मक अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह एक सामाजिक दस्तावेज के रूप में विकसित हुई है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से लेकर आज के वैश्वीकरण, उदारीकरण और तकनीकी युग तक कविता ने देश में घटित परिवर्तनों को न केवल दर्ज किया है, बल्कि परिवर्तन की दिशा में सक्रिय भूमिका भी निभाई है। देश बदलने की यह पहल कविता के माध्यम से विचारों, संवेदनाओं और संघर्षों की भाषा बनकर सामने आई है। समकालीन कवि समाज में व्याप्त विषमता, अन्याय, भेदभाव और शोषण के विरुद्ध आवाज उठाते हैं। इस प्रकार, हिंदी कविता आज केवल 'कविता' नहीं, बल्कि 'आंदोलन' है विचारों का, चेतना का, और परिवर्तन का। वर्तमान समय विज्ञान का युग है। आज आदमी चाँद तक पहुँच चुका है। देश भी अपनी सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिस्थितियों के साथ गदल रहा है। आज हमारे पास संसाधान है। आज अनेक क्षेत्रों में अत्म निर्भर हुए है। किसी भी देश का लोक सास्कृतिक परिवेश और लोक रीतियाँ अपने लोक जीवन को समृद्ध करतें हैं। लोक जीवन में आम जन अपने देश का मूल्यांकन अपने आप से करते हैं।

बीज शब्द– राजनीति, समाज, आदमी, संघर्ष, संवेदना, समकालीन।

Introduction

भारत देश को आजद हुए आज 78 वर्ष हो गये हैं। आजदी के बाद से देश ने विकसित भारत की एक अहम् यात्रा तय किया है। किसी भी देश की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन करने के लिए वहाँ के मूल निवासियों की क्या स्थिति है। उनके जीवन यापन के क्या साधन है? उन्हें किन–किन मूलभूत सुविधाओं की आवश्यकता है। ये सारे प्रश्न उस मूल्यांकन को और महत्वपूर्ण बनाते हैं। समकालीन हिंदी कविता भारतीय समाज के विकास, परिवर्तन और चेतना का सशक्त माध्यम रही है। आधुनिक भारत के बदलते परिदृश्य में कविता केवल भावनात्मकया सौंदर्यपरक माध्यम नहीं रह गई है, बल्कि यह समाज, राजनीति, तकनीक, शिक्षा और संस्कृति के यथार्थ को अभिव्यक्त करने का उपकरण बन चुकी है। 'विकसित भारत' की अवधारणा जहाँ शासन और नीति के स्तर पर एक दृष्टि प्रस्तुत करती है, वहीं समकालीन कवि इस विकसित भारत की आहट को अपनी संवेदनाओं और विचारों में मूर्त रूप देते हैं। आधुनिक कवियों की रचनाओं के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार कविता में 'विकसित भारत' की परिकल्पना प्रकट होती है।

'विकसित भारत' का अर्थ केवल आर्थिक उन्नति नहीं है, बल्कि यह सामाजिक न्याय, लैंगिक समानता, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरणीय संतुलन और नागरिक चेतना के समग्र विकास से जुड़ा हुआ है। यह परिकल्पना

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 12, December 2025

केवल नीतिगत दृष्टि नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और नैतिक विकास की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। कविता इस विकास के भावनात्मक और नैतिक पक्ष को उजागर करती है। समकालीन कवियों ने इस नए भारत की तस्वीर को अपने शब्दों में ढालते हुए यह दिखाया है कि विकास केवल तकनीकी साधनों से नहीं, बल्कि मनुष्य की चेतना से संभव है।

समकालीन हिंदी कविता बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध और इक्कीसवीं सदी की आरंभिक दसकों में विकसित हुई। यह काल राजनीतिक अस्थिरता, आर्थिक उदारीकरण, तकनीकी प्रगति और वैश्वीकरण का युग रहा। ऐसे समय में कवि केवल प्रेम या प्रकृति तक सीमित नहीं रहे, उन्होंने समाज की जटिलताओं को अपने शब्दों में उतारा। 1960 के बाद भारत ने राजनीतिक अस्थिरता, सामाजिक विषमता और आर्थिक असमानता का जो दौर देखा, उसने साहित्य को गहराई से प्रभावित किया। नई कविता आंदोलन के बाद हिंदी कविता ने 'निजता' से आगे बढ़कर 'समष्टि' को अपनाया। केदारनाथ सिंह, कुँवर नारायण, रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, विष्णु खरे, मंगलेश डबराल, आलोक धन्वा, विजयदेव नारायण साही, गजानन माधव मुक्तिबोध जैसे कवियों ने इस दौर में कविता को एक नई दृष्टि दी। मुक्तिबोध के शब्दों में कहे तो "कला का कार्य केवल सौंदर्य देना नहीं, बल्कि चेतना को जगाना है।" यह कथन समकालीन हिंदी कविता के मर्म को व्यक्त करता है। दर असल "जिसे हम आधुनिकता कहते हैं वह एक प्रक्रिया का नाम है। यह प्रक्रिया बुद्धिवादी बननें की प्रक्रिया है।"[1]

देश बदलने की पहल के रूप में कविता समाज की चेतना का रूप है। जब समाज में अन्याय या असमानता बढ़ती है, तो कविता प्रतिरोध का माध्यम बन जाती है। समकालीन हिंदी कविता ने सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तनों के प्रति एक सजग दृष्टि रखी है। समकालीन कवियों ने जाति, वर्ग, लिंग और धर्म के आधार पर होने वाले भेदभाव का विरोध किया है। दलित कविता, स्त्री कविता और आदिवासी कविता जैसी धाराएँ इसी परिवर्तन की उपज हैं। दलित कवियों जैसे ओमप्रकाश वाल्मीकि, दयानंद पारीक, और संजय कुंदन की कविताएँ समाज के हाशिये पर खड़े व्यक्ति की आवाज बनीं।

"मैं भी आदमी हूँ
मेरे भी सपने हैं
मेरे भी अधिकार हैं।"

"जब भी देखता हूँ मैं
झाड़ू या गन्दगी से भरी बाल्टी–कनस्तर
किसी के हाथ में
मेरी रगों में
दहकने लगते हैं
याताओं के कई हजार वर्ष एक साथ
जो फैले हैं इस धरती पर
ठंडें रेतकणों की तरह।
मेरी हथेलियों भीग–भीग जाती हैं
पसीने से
आँख में उतर आता हैं
इतिहास का स्याहपन

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 12, December 2025

अपनी आत्मघाती कुटिलताओं के साथ।"[2]

"प्रत्येक जागरूक नागरिक की चेतना को झिझोड़नें वाले ऐसे ही सवाल समकालीन कविता के मूलभूत सरोकारों का निर्धारण करते हैं।"[3]

हिंदी कविता ने देश की राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार, असमानता और जनविरोधी नीतियों पर करारा प्रहार किया है। रघुवीर सहाय की कविता 'लोग भूल गए हैं' सत्ता और जनमानस के बीच बढ़ती दूरी को उजागर करती है। रघुवीर सहाय लिखते हैं कि "लोग भूल गए हैं कि देश उनका है।" यह कथन उस जनचेतना को जगाने का प्रयास है जो देश परिवर्तन की आधारशिला है।

"झूठे निर्लज लाालची, भ्रष्ट और सरकार।
क्या दे सकते हैं कभी, एक भली सरकार।।
एक भली सरकार, चाहिए उत्तम चुनिए।
हो कितना भी शोर, बात मन की ही सुनिए।।
मन के निर्णय अरूण, हमेशा रहें अनुठे।
देते मन को इेस, लालची निर्लज झूठे।।"[4]

राजनीति में समकालीन कवियों ने कटाक्ष किया है। लोकतन्त्र में नेता और मतदाता सिक्के के दो पहलू हैं। समकालीन कविता में नेताओं और मतदताओं की प्रवृत्ति चिंता का विषय है। राजनीति में आये दिन उठा–पटक देखने को मिलता है। कोई भी नेता किसी भी दल में स्थाई बहुत दिनों तक नहीं रह पाता है। उसकी अपनी आंकक्षाएं हैं, अपने निजी स्वार्थ हैं।, जिसके चलते वह अपना पाला आये दिन बदलता रहता है। उसका काम समाज में लोगों का आपस में लड़ना रह गया। जिसका समय–समय पर फायदा पाता है।

"एक कुत्ते ने दूसरे कुत्ते को,
देखकर जोर से भौका,
सामने से नेता आ रहा नेता
यह दृश्य देखकर चौंका,
उसने कुत्ते से कहा– भाई,
क्यों लड़ते हो?
कुत्तें ने कहा–नेता जी
लड़ना तो आपका काम है,
हमने तो शर्त लगाई थी,
किसकी आवाज में,
अपने मालिक का नाम है।"[5]

समाज का ताना–बान कुछ इस कदर बिखर गया है कि सब कुछ स्वार्थ और हीनता बोध के घेरे में घिर कर रह गये हैं। वर्तमान समय में व्यक्ति सभी संसधानों के रहते हुए असहाय सा हो गया। वह

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 12, December 2025

कुछ इस कदर दीन–हीन हो गया कि चाहकर भी अपनी व्यथा को नहीं कह पा रहा है। वह इस भीड़ में भी एकाकी सा जीवन जिये जा रहा है–

"ऊँचे ऊचे पेड़ बहुत हैं
लेकिन छाँव नहीं
दूर तलक केवल पगडंड़ी, कोई गाँव नहीं
ओढ चले आँचल धरती का बाहों में अम्बर नहीं
मुठ्ठी में हैं आहत खुशियाँ किरणें कांवर भर
चूर–चूर अभिलाषाओं को, मिलती ठाँव नहीं हैं।"[6]

भारतीय समाज में आज विकसित होने की होड़ में काफी कुछ काम हो रहा है। आये दिन समाज में तरक्की के नये–नये फार्मूले अमल में लाये जाते है।

समकालीन हिंदी कविता में स्त्री आवाज ने एक नई शक्ति पाई है। कविता अब केवल 'वस्तु' नहीं, बल्कि 'वक्ता' के रूप में स्त्री को प्रस्तुत करती है। कात्यायनी, अनामिका, मृदुला गर्ग, और गगन गिल जैसी कवयित्रियों ने स्त्री अस्मिता, सशक्तिकरण, शिक्षा और समानता स्वतंत्रता और पहचान की आवाज उठाई है। जो विकसित भारत का अनिवार्य हिस्सा है।

"मैं अपने शब्दों से खुद को गढ़ती हूँ
हर बार मिटती हूँ, फिर बनती हूँ।"
यह परिवर्तन की प्रक्रिया का प्रतीक है।

"क्या हुआ गर लड़की हूँ
मुझे भी घर में थोड़ी जगह चाहिए
लड़की हाने की सजा गर्भ में मुझे मत दो
हूँ जीवित प्राणी इस धरती का
मुझे भी मेरे हिस्से का थोड़ा प्यार दो
प्यार दो अधिकार दो
मुझे भी इस धरती में जीने का हक दो
हूँ जननी मैं पुरूष की
फिर क्यों जनम से पहले ही घोंट दिया जाता है
गला मेरा
इक्कीसवी सदी में भी।"[7]

लोक जीवन मे देश बदलाव की आहट साफ सुनाई देती है। लोक जीवन अपने समय का मूल्यांकन करता है। वह देश, समाज में हो रहे परिर्वतन को गहराई तक महसूस करता है। उसने देखा कि अब खेतों पर बैल नहीं, और न तो बैल गाडी दिखाई दे रही है। आज तकनीक का समय है। आज खेतों पर मजदूर से ज्यादा यंत्र दिखलायी पड़ते हैं। आज नहर के स्थान पर समरसेबल से पानी की जरूरत पूरी हो रही है। आजकल गाँवों में दिये की जगह एलईडी बल्ब जगमगा रहें हैं। घर–घर फिल्मी गीत बज रहें हैं। पहले

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 12, December 2025

लोग आपस में एक साथ बैठते थे और अपना सुख–दुख साझा करते थे। उनके दुख–सुख भले ही व्यक्गित होते थे किन्तु वे सामूहिक होते थे। क्योंकि वह लोकगीतों लोककथाओं लोक गाथाओं में अभिव्यक्त होते थे–

"जमाना बदल गया
जमाना बदल गया
पहले लोग चिठ्ठी बाँचे
आज बाँचे वार्टशएप
हाथ से जाने टैम
कब निकल गया
जमाना बदल गया।
पहले लोग आपस में
घन्टों बतियायें
काम करें और सुस्तायें
अब तो वो सब
सपना हो गया
जमाना बदल गया।"[8]

आज की कविता में पर्यावरणीय संकट भी महत्वपूर्ण विषय बन चुका है। केदारनाथ सिंह की कविता "बाघ" मनुष्य और प्रकृति के संबंधों को लेकर गहरी संवेदना व्यक्त करती है। कवि यहां प्रकृति को केवल पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि अस्तित्व का अंग मानते हैं देश और समाज दोनों के लिए परिवर्तन का आधार–

"कुआँ सूखे, सूखे ताल तलैया
अब कैसे पानी पियौह भईया।
घर–घर नल लगे हैं
नल से पानी पियौह भईया।।
ब्याह मा कईसे पूजिहव कुआँ?
न घर मा बैल है और न है जुआँ
नल के सात फेरे लइलेब
हल–जुआँ और बैल का चित्र देख लेबे
ऐसे संस्कार पूरे करलेबे भईया।।"[9]

नई सदी के कवियों ने कविता को डिजिटल और सामाजिक मीडिया के माध्यम से जनसंपर्क का साधन बना दिया है। वे कविता को मंच, पृष्ठ और सोशल मीडिया तीनों स्तरों पर देश की नई चेतना का हिस्सा बना रहे हैं। कविता और देश की नई पीढ़ी है। नई पीढ़ी के कवि जैसे गीत चतुर्वेदी, अशोक कुमार पांडेय, मंगलेश डबराल, नीलोत्पल, और नीलम सिहं देश के सामाजिक–राजनीतिक बदलावों पर तीखी टिप्पणी करते हैं। उनकी कविताओं में लोकतंत्र, असमानता, बेरोजगारी, किसान संकट, शिक्षा और न्याय

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 12, December 2025

जैसे मुद्दे उभरते हैं। इस तरह कविता अब केवल 'कविता' नहीं रही। वह 'प्रतिक्रिया' है, 'संघर्ष' है, और 'परिवर्तन की पहल' है।

देश को बदलने की पहल में कविता की भूमिका बड़ी अहम होती है। यह कविता ही है जो व्यक्तियों में चेतना का प्रसार करता है। कविता मनुष्य की संवेदना को जगाती है। वह व्यक्ति को उसके अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सजग करती है। कविता सत्ताधारी और आमजन के बीच संवाद का कार्य करती है। यह असहमति की अभिव्यक्ति का सबसे कोमल और प्रभावी माध्यम है। कविता समाज के लिए नैतिक दिशा प्रदान करती है। यह बताती है कि देश बदलना केवल व्यवस्था बदलना नहीं, बल्कि दृष्टि बदलना है। कविता स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर आज के किसान और मजदूर आंदोलनों तक प्रेरणा का स्रोत रही है। नामवर सिंह कहते हैं कि– "समकालीन कविता अपने समय की सबसे सजीव प्रतिक्रिया है।"

"यह देश मेरा है
पर यह देश वही होगा
जब हर भूख मिटेगी
और हर बच्चा मुस्कुराएगा।"

ऐसी कविताएँ एक समतामूलक और न्यायपूर्ण भारत की कल्पना करती हैं।

केदारनाथ सिंह की कविताओं में मिट्टी और मशीन के बीच का संतुलन देखने को मिलता है। उनकी कविता 'बनारस' में परंपरा और आधुनिकता का अद्भुत संगम है। अरुण कमल की कविताएँ विकास के साथ आम आदमी की व्यथा को सामने लाती हैं। मंगलेश डबराल ने विकास के नाम पर हो रहे विस्थापन, पर्यावरणीय क्षरण और मानवीय संवेदना के पतन को अपनी कविताओं में स्वर दिया है। राजेश जोशी की कविताएँ श्रमशील वर्ग और आम नागरिक के दृष्टिकोण से नए भारत को देखती हैं।

"इस नये बसते इलाकों में
जहाँ रोज बन रहे हैं नये–नये मकान
मैं अक्सर रास्ता भूल जाता हूँ
धोखा दे जाते हैं पुराने निशान
खोजता हूँ ताकता पीपल का पेड़
खोजता हूँ ढहा हुआ घर
और जमीन का खाली टुकड़ा जहाँ से बाँए
मुड़ना था मुझे
फिर दो मकान बाद बिना रंग वाले लोहे के फाटक का
घर था इकमंजिला
और मै हर बार एक घर पीछे
चल देता हूँ।"[10]

कविता केवल प्रगति का उत्सव नहीं मनाती, बल्कि चेतावनी भी देती है कि विकास के नाम पर यदि मनुष्य की करुणा, पर्यावरण और नैतिकता खो जाए तो यह विकास अधूरा है। आज की कविता तकनीकी युग के प्रभाव, मोबाइल संस्कृति, और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बढ़ते उपयोग के बीच मानवता की रक्षा की पुकार बनती जा रही है। कवि विकास के साथ संवेदनशीलता की आवश्यकता पर बल देते हैं। उनकी दृष्टि में

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 12, December 2025

विकसित भारत वह है, जहाँ हर व्यक्ति को समान अवसर मिले और जहाँ प्रकृति व संस्कृति का संतुलन बना रहे।

समकालीन हिंदी कविता में विकसित भारत की आहट स्पष्ट रूप से अनुभव की जा सकती है। यह कविता केवल राष्ट्र के विकास का उत्सव नहीं, बल्कि उसके आत्मनिरीक्षण की प्रक्रिया भी है। कवि अपने शब्दों से यह प्रश्न उठाते हैं कि क्या हमारा विकास मानवता को और बेहतर बना रहा है या हम केवल तकनीकी सुविधाओं में उलझते जा रहे हैं। इस प्रकार, समकालीन कविता में 'विकसित भारत' का चित्र मानवीय मूल्यों, संवेदनाओं और सामाजिक समरसता के साथ जुड़ा हुआ है। कविता हमें यह सिखाती है कि असली विकास तब होगा जब समाज का हर वर्ग आत्मसम्मान और समानता के साथ जीवन जी सके।

"तीन रंग से सज्जित ध्वज में
वसुंधरा की दाया है,
जब–जब दुखी हुआ हूँ
इसको देख के मन हर्षाया है,
इसका गौरव अमर रहें
ये स्वप्न रहे साकार सदा
वरण मृत्यु का कर कितनों ने
इस पर प्राण लुटाया है
सैतालिस का जाग्रत बालक
अब तो सभल रहा है
देश बदल रहा है।"[11]

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि समकालीन हिंदी कविता आज देश में परिवर्तन की सबसे सशक्त आवाज है। यह कविता केवल शब्दों का खेल नहीं, बल्कि जन–चेतना की क्रांति है। कविता ने समाज के वंचित वर्गों, स्त्रियों, किसानों, मजदूरों, युवाओं और पर्यावरण की आवाज बनकर देश बदलने की दिशा में नये विमर्श खड़े किए हैं। आज जब भारत डिजिटल, वैश्विक और आर्थिक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है, तब समकालीन हिंदी कविता यह याद दिलाती है कि देश बदलने की असली शुरुआत मनुष्य की संवेदना से होती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. रायराखी, आधुनिकता की भाषा और मुक्तिबोध, केन्द्रिय हिंदी संस्थान आगरा संस्करण 2009 पृ.सं. 17
2. भारती कँवल (सम्पादक) दलित निर्वाचित कविताएँ इतिहास बोध प्रकाशन संस्करण 2006 पृ.सं. 67
3. शर्मा ऋषभ देव, सृजनगाथा–समकालीन कविताः सरोकार और हस्ताक्षर परिलेख प्रकाशन संस्करण नजीबाबाद 2020 पृ.सं.23
4. निगम अरूण, शब्द गठरिया बांध छंद संग्रह अंजुमन प्रकाशन प्रयागराज पृ.सं.79
5. श्रीवास्तव मनोज, प्रयास जारी है, कविता संग्रह वैभव प्रकाशन रायपुर पृ.सं.50
6. कौशल मुकुन्द, सिर पर धूप आँख पर सपने, गीत संग्रह, वैभव प्रकाशन रायपुर पृ.स. 19
7. चंद्र शैलेश साक्षात्कार अप्रैल 2003 इक्कीसवी सदी में स्त्री पृ.सं.48

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 12, December 2025

8. देवी शान्ती, साक्षात्कार, ग्राम छीट का पुरवा, पोस्ट गौरी, जिला फतेहपुर (उ.प्र.) दिनांक 1 नवम्बर 2022
9. वही,
10. कमल अरूण, स्पर्स भाग–1 एन.सी.आर.टी. हिंदवी प्रकाशन संस्करण 2022 पृ.सं. 86
11. अनहद कृति अंक 34 जनवरी 2 वर्ष 2022 कविता 'देश बदल रहा है'–राजीव द्विवेदी पृ.सं. 32